ENERGY FOR EVER

इरेडा
IREDA

ONCE IREDA ALWAYS IREDA

(A Navratna CPSE)

अक्षय क्रांति

(ई-पत्रिका)

अप्रैल - जून 2026 अंक

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख/कविता रचिता श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	मदर्स डे	लेख	स्वेता गुप्ता, उप महाप्रबंधक (परियोजना)	01
2.	प्यारे दोस्त	कविता	संगीता श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा)	03
3.	मेरी मन्नत सिर्फ तुम	कविता	आशुतोष भूयां, उप महाप्रबंधक (परियोजना)	04
4.	भारत का नवीकरणीय ऊर्जा में योगदान	लेख	अंकित द्विवेदी, वरिष्ठ प्रबंधक (विधि)	06
5.	बैटरी ऊर्जा भंडारण: भारत की हरित ऊर्जा यात्रा की आवश्यकता	लेख	पीयूष अग्रवाल, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा)	09
6.	शहर लिखा है	कविता	आशुतोष तिवारी, प्रबंधक (परियोजना)	11
7.	हिंदी साहित्य का इतिहास	लेख	अजय कुमार गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)	13
8.	तिरुवनंतपुरम, केरलम – मेरा गृह जिला	लेख	एस कृष्ण कुमार, उप प्रबंघक (मानव संसाधन)	16
9.	योग को अपनाएं और जीवन को बेहतर बनाएं	लेख	रिज़वान अथर, उप प्रबंधक (परियोजना)	19
10.	स्वयं के प्रति जिम्मेदार	लेख	गौरव वार्ष्णेय, उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)	21
11.	हरिद्वार–ऋषिकेश यात्रा: आध्यात्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम	लेख	निष्ठा निधि, उप प्रबंधक (मानव संसाधन)	22
12.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और साइबर सुरक्षा : एक छोटी सी सीख	लेख	अमित कुमार, उप प्रबंधक (सूचना सुरक्षा समूह)	24
13.	शहरों की भागदौड़ और पहाड़ों की शांति	लेख	साक्षी साव, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा)	26
14.	अस्तित्व	कविता	ईशा श्रीवास्तव, पत्नि- मैत्रेय कुमार श्रीवास्तव	27
15.	कार्यस्थल के सारथी: ISFJ व्यक्तित्व	लेख	राहुल राज, कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना)	29
16.	स्वदेशी सौर सेल: कुछ वर्षों की पीड़ा, कई दशकों की समृद्धि	लेख	नमन वशिष्ठ, कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना)	31
17.	**राजभाषा संबंधी सचित्र गतिविधियां**			34

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक

डॉ. बिजय कुमार महान्ती

निदेशक (वित्त)

परामर्शदाता

श्री दीपक कुमार बारिक

कार्यपालक निदेशक (विधि एवं मानव संसाधन)

श्रीमती माला घोष चौधुरी

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहसंपादक

श्री आलर कुल्लू , प्रबंधक (राजभाषा)

श्री अजय कुमार गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री रोहित कुमार साव, उप प्रबंधक (राजभाषा)

सुश्री तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं सरकार अथवा इरेडा का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

श्री प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

संदेश

प्रिय साथियों,

हिंदी प्रभाग की तिमाही ई-पत्रिका अक्षय क्रांति के अप्रैल-जून 2026 अंक के माध्यम से आप सभी से मुझे यह साझा करते हुए अत्यंत हर्ष और संतोष का अनुभव हो रहा है कि भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस वर्ष हमने ₹1,873 करोड़ का अब तक का सर्वाधिक वार्षिक कर पश्चात लाभ अर्जित किया है, जो हमारी मजबूत रणनीति, समर्पित टीमवर्क और संस्थागत प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

इरेडा की सतत प्रगति का परिलक्षण हमारे प्रमुख वित्तीय संकेतकों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। परिचालन से कुल आय ₹8,337 करोड़ तक पहुँच गई है तथा ऋण पुस्तिका ने ₹93,000 करोड़ का महत्वपूर्ण स्तर पार कर लिया है। इसके साथ ही ऋण स्वीकृति और संवितरण में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जो अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में हमारी बढ़ती भागीदारी और प्रभाव को दर्शाता है।

हमारी सुदृढ़ वित्तीय स्थिति, जिसमें नेट वर्थ में उल्लेखनीय वृद्धि और परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार शामिल है, हमें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए और अधिक सक्षम बनाती है। यह उपलब्धियाँ न केवल हमारे संगठनात्मक लचीलेपन को रेखांकित करती हैं। बल्कि देश की हरित ऊर्जा संक्रमण यात्रा में इरेडा के योगदान को भी सशक्त बनाती हैं।

भारत आज नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में तेज़ी से अग्रसर है। ऐसे महत्वपूर्ण समय में, इरेडा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। हमारा लक्ष्य है कि हम अपनी विकास यात्रा को जिम्मेदारीपूर्वक आगे बढ़ाते हुए नवाचार, दक्षता और सततता को केंद्र में रखें तथा अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण के माध्यम से राष्ट्र की ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन में योगदान दें।

मैं इस अवसर पर 'टीम इरेडा' के प्रत्येक सदस्य के समर्पण, निष्ठा और उत्कृष्ट योगदान के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही, मैं माननीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, राज्य मंत्री, मंत्रालय के सचिव तथा निदेशक मंडल के मार्गदर्शन एवं निरंतर सहयोग के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मुझे यह भी संतोष है कि हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी न केवल अपने कार्यदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं, बल्कि राजभाषा हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने में भी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। हिंदी में कार्य करना न केवल हमारी सांस्कृतिक और राजभाषाई जिम्मेदारी है, बल्कि यह कार्यकुशलता एवं संचार की सरलता को भी बढ़ाता है। मुझे विश्वास है कि आप सभी के सहयोग और समर्पण के साथ इरेडा भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्टता के नए आयाम स्थापित करता रहेगा और भारत की हरित ऊर्जा क्रांति में अग्रणी भूमिका निभाता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

संदेश

डॉ. बिजय कुमार महान्ती

निदेशक (वित्त)

प्रिय सहकर्मियों,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड की अप्रैल–जून 2026 तिमाही ई-पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी से संवाद स्थापित कर रहा हूँ। यह ई-पत्रिका न केवल हमारे संगठन की उपलब्धियों, पहलों एवं प्रगति का दस्तावेज है, बल्कि यह हमारे सामूहिक प्रयासों, समर्पण एवं उत्कृष्टता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी सजीव प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है।

वित्तीय दृष्टि से यह तिमाही इरेडा के लिए सुदृढ़ प्रदर्शन एवं सतत विकास की प्रतीक रही है। बदलते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य तथा ऊर्जा क्षेत्र में नवाचारों के मध्य, हमारे संगठन ने विवेकपूर्ण वित्तीय प्रबंधन, जोखिम संतुलन तथा संसाधनों के प्रभावी उपयोग के माध्यम से अपनी मजबूती को और अधिक सुदृढ़ किया है। अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहन प्रदान करते हुए, हमने देश की ऊर्जा सुरक्षा और हरित भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देना जारी रखा है।

आज जब "सतत विकास" वैश्विक प्राथमिकता बन गया है, इरेडा की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। हम न केवल एक वित्तीय संस्थान के रूप में कार्य कर रहे हैं, बल्कि भारत के हरित ऊर्जा अभियान के सशक्त भागीदार भी हैं। इस दिशा में हमारे प्रत्येक कर्मचारी का समर्पण और प्रतिबद्धता सराहनीय है।

मैं विशेष रूप से यह उल्लेख करना चाहूँगा कि संगठनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पारदर्शिता, उत्तरदायित्व एवं नवाचार को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। हम सभी को मिलकर इन मूल्यों को अपनी कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बनाना होगा, ताकि हम आने वाली चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सकें और इरेडा को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकें।

अंत में, मैं सभी सहकर्मियों एवं हितधारकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग एवं विश्वास के कारण इरेडा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। मुझे विश्वास है कि हम सब मिलकर भारत को स्वच्छ, हरित एवं ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाने के राष्ट्रीय संकल्प को साकार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

संदेश

श्री दीपक कुमार बारिक
कार्यपालक निदेशक (विधि एवं मानव संसाधन)

प्रिय सहकर्मियों,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड की अप्रैल–जून 2026 तिमाही हिंदी ई-पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हमारे संगठन की प्रगति, उपलब्धियों तथा कर्मचारियों की सृजनात्मकता को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

वर्तमान समय में, जब अक्षय ऊर्जा क्षेत्र तीव्र गति से विकास कर रही है, इरेडा न केवल वित्तीय सहयोग प्रदान करने वाली संस्था के रूप में, बल्कि एक उत्तरदायी एवं संवेदनशील संगठन के रूप में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में विधि एवं मानव संसाधन विभाग की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है, जो संगठन को एक सुदृढ़, पारदर्शी एवं अनुशासित ढांचा प्रदान करने में सहायक होती है।

विधिक दृष्टि से, हमारी प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि संगठन की सभी गतिविधियाँ प्रासंगिक नियमों, नीतियों एवं वैधानिक प्रावधानों के अनुरूप संचालित हों। इसके साथ-साथ, हम नीतिगत स्पष्टता, अनुबंध प्रबंधन तथा जोखिम शमन के माध्यम से संगठन की दीर्घकालिक हितों की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

मानव संसाधन के क्षेत्र में, हमारा उद्देश्य केवल कार्यबल प्रबंधन तक सीमित नहीं है, बल्कि एक प्रेरणादायी, समावेशी एवं नवाचारोन्मुख कार्य संस्कृति का निर्माण करना है। हम यह सुनिश्चित करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं कि प्रत्येक कर्मचारी को अपने कौशल के विकास, क्षमता संवर्धन एवं पेशेवर उन्नति के पर्याप्त अवसर प्राप्त हों। संगठन के प्रत्येक सदस्य का योगदान हमारे समग्र सफलता का अभिन्न अंग है।

इसके अतिरिक्त, हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी हमारे संगठन का योगदान सराहनीय है। हिंदी ई-पत्रिका जैसे मंच न केवल भाषा के विकास में सहायक हैं, बल्कि कर्मचारियों की सहभागिता को भी प्रोत्साहित करते हैं।

मैं सभी सहकर्मियों से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी एवं पेशेवर उत्कृष्टता के साथ करते हुए संगठन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपना योगदान देते रहें।

अंत में, मैं सभी कर्मचारियों, सहयोगियों एवं हितधारकों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिनके निरंतर सहयोग एवं समर्पण के कारण इरेडा प्रगति के पथ पर अग्रसर है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी मिलकर भारत को स्वच्छ, हरित एवं आत्मनिर्भर ऊर्जा भविष्य की दिशा में सशक्त योगदान देते रहेंगे।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

संदेश

माला घोष चौधुरी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

प्रिय सहकर्मियों,

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) की अप्रैल–जून 2026 तिमाही हिंदी ई-पत्रिका के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका न केवल हमारे संगठन की उपलब्धियों, नवीन पहलों एवं प्रगति का दर्पण है, बल्कि यह हमारे कर्मचारियों की सृजनात्मकता, सहभागिता तथा संगठनात्मक प्रतिबद्धता का भी सजीव प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है।

मानव संसाधन किसी भी संगठन की वास्तविक शक्ति होते हैं, और इरेडा में कार्यरत प्रत्येक कर्मचारी हमारे विकास एवं सफलता की आधारशिला है। वर्तमान गतिशील एवं प्रतिस्पर्धी परिवेश में, यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम अपनी कार्यसंस्कृति को निरंतर सशक्त, समावेशी एवं नवाचारोन्मुख बनाएं। इस दिशा में मानव संसाधन विभाग द्वारा विभिन्न पहलें की जा रही हैं, जिनका उद्देश्य कर्मचारियों के कौशल विकास, क्षमता संवर्धन एवं पेशेवर उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करना है।

हम यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं कि प्रत्येक कर्मचारी को कार्य निष्पादन हेतु ऐसा वातावरण प्राप्त हो, जहाँ पारदर्शिता, समान अवसर, सम्मान एवं सहयोग की भावना को प्रोत्साहन दिया जाए। प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रमों, कर्मचारी सहभागिता गतिविधियों तथा कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से हम संगठन में सकारात्मक ऊर्जा एवं प्रेरणा का संचार करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

इसके साथ-साथ, कार्य निष्पादन प्रबंधन प्रणाली एवं मानव संसाधन नीतियों को और अधिक प्रभावी एवं पारदर्शी बनाने की दिशा में भी निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास को भी प्रोत्साहन मिल सके।

मुझे यह भी हर्ष है कि हिंदी भाषा के संवर्धन एवं प्रोत्साहन में इरेडा का योगदान सराहनीय है। हिंदी ई-पत्रिका जैसे मंच न केवल राजभाषा के उपयोग को बढ़ावा देते हैं, बल्कि कर्मचारियों के विचारों एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति को भी एक सशक्त माध्यम प्रदान करते हैं।

अंत में, मैं सभी सहकर्मियों से अपेक्षा करती हूँ कि वे अपनी निष्ठा, समर्पण एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ संगठन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी मिलकर इरेडा को उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने में सफल होंगे एवं देश के हरित भविष्य के निर्माण में अपनी सशक्त भूमिका निभाते रहेंगे।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

स्वेता गुप्ता,

उप महाप्रबंधक (परियोजना)

मदर्स डे

अप्रैल 2026 की एक शनिवार सुबह, मैं रोज़ की तरह लगभग 7 बजे अपनी कॉलोनी में टहलने निकली। करीब 50 मीटर चलने के बाद जब मैं टी-पॉइंट पर पहुँची, तो देखा कि कुछ बच्चे अपने माता-पिता के साथ स्कूल बस का इंतज़ार कर रहे थे। तभी मेरी नज़र एक बच्चे और उसके पिता पर पड़ी—कुछ जाना-पहचाना सा एहसास हुआ। लेकिन मेरी चाल तेज थी, और इससे पहले कि स्मृतियों की परतें पूरी तरह खुलतीं, मैं आगे निकल चुकी थी। कुछ ही क्षणों में उस बच्चे से मिलने की उत्कंठा इतनी प्रबल हो गई कि मैं तुरंत जॉगिंग करते हुए शॉर्टकट रास्ते से वापस उसी टी-पॉइंट की ओर लौटने लगी। मन में एक ही चिंता थी—कहीं वह बच्चा स्कूल बस में बैठकर चला न जाए। मुझे न उनका नाम पता था, न यह कि वे किस बिल्डिंग में रहते हैं।

जैसे ही मैं उस सड़क पर पहुँची, जहाँ से टी-पॉइंट साफ दिखाई दे रहा था, मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैं तेजी से उस बच्चे के पास पहुँची। उसके पिता ने मुझे उसी वक़्त पहचान लिया था जब मैं कुछ क्षण पहले वहाँ से गुजरी थी। ऐसा महसूस हुआ जैसे, इन क्षणों में संकल्पों और भावनाओं का कोई अदृश्य संवाद चल रहा हो और आश्चर्य की बात यह है कि हम एक-दूसरे का नाम नहीं जानते थे।

मैंने प्यार से बच्चे का चेहरा अपने दोनों हाथों में थाम लिया और स्नेह भरी आवाज़ में कहा, **"अरे, ये तो कितना बड़ा हो गया!"**

पिता ने बताया कि उसका नाम आदित्य है और वह अब सातवीं कक्षा में पढ़ता है। पिता के चेहरे पर मुस्कान थी, लेकिन बच्चा स्पष्ट रूप से हैरान था कि यह अपरिचित महिला उससे इतना अपनापन क्यों दिखा रही है। तभी बस आ गई, और मैंने उसे स्नेह से "टाटा-बाय-बाय" किया।

कुछ देर पिता से बातचीत में पता चला कि, आदित्य जब केवल चार वर्ष का था, उसकी माँ का निधन हो गया और कुछ महीनों बाद उसकी दादी भी नहीं रहीं।

आदित्य अपने दादाजी के साथ बड़ा हो रहा था, क्योंकि उसके पिता कारगिल में कार्यरत थे। हाल ही में दो महीने पहले उनका तबादला फरीदाबाद हुआ और अब वे आदित्य को अपने साथ रखकर माता और पिता—दोनों की जिम्मेदारियाँ निभा रहे हैं।

दरअसल, आदित्य की माँ से मेरी पहली मुलाकात पार्क में हुई थी, जब वह केवल 4-5 महीने का था। फिर कुछ मुलाकातें तब हुईं, जब मैं सैर पे जाती और संयोगवास उस वक्त वो साइकिल चलाता और उसके माता-पिता साथ में सैर करते। करीब चौथी बार जब मैं उसकी माँ से मिली थी, वह एक लाइलाज बीमारी से जूझ रही थीं। अपनी मनोस्थिति और पीड़ा मुझसे ऐसे साझा किया जैसी की कोई आत्मिक संबंध रहा हो क्योंकि वास्तव में तो हम एक-दूसरे का नाम भी नहीं जानते थे। और पाँचवी बार, उनके शरीर छोड़ने के पाँच दिन पूर्व मुलाक़ात हुई थी ।

उस मुलाकात के पाँच दिन बाद, मार्च 2020 में, उन्होंने इस बीमारी से हारकर जीवन को अलविदा कह दिया। यह बात मुझे कुछ समय बाद पता चली। समय अपनी गति से चलता रहा, परंतु ये स्मृतियाँ मस्तिष्क पर अंकित हो गईं।

दो सप्ताह बाद, 9 मई 2026, फिर शनिवार को मैं सुबह टहलने निकली। मेरी आँखें अनायास ही आदित्य को ढूँढ रही थीं। स्कूल बस आते देख, मैं बस स्टॉप तक तेज चहलकदमी करते हुए पहुँची। लेकिन वह दिखाई नहीं दिया। मैंने आदित्य के दोस्त की माता से, आदित्य के बारे में पूछा, परंतु उन्हें भी आदित्य के छुट्टी लेने का कारण नहीं पता था । मुझमें दोबारा बच्चे से मिलने की और उसकी ख़ुशखैराफत जानने की इच्छा जाग उठी।

अगले दिन रविवार को, सुबह लगभग 11 बजे, मैं कुछ चॉकलेट लेकर उसके घर पहुँची। बच्चे से बहुत बातें हुईं और मेरे मन को एक अद्भुत सुकून मिला। उस रात, जब मैं दिन भर की घटनाओं के बारे में सोच रही थी, तो अचानक मन में एक ख़ुशी की लहर उठी । क्योंकि **उस दिन 'मदर्स डे' था।**

मैंने भीतर ही भीतर परमात्मा को धन्यवाद दिया और एक शांत संतोष अवस्था के साथ सो गई।**ओम शांति।**

****

संगीता श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

प्यारे दोस्त

पहियों पर भागती दौड़ती इस रवानगी में
इक-पल का मौका ना चुरा पाई कि
तुमसे रूबरू कर लूँ
कुछ अपनी कुछ तुम्हारी खास
कुछ खट्टी मीठी बात कर लूं
तुम हर सुबह आती रहीं, नरम-नरम
एहसास के साथ
ओ मेरी प्यारी ओस
पर मैं ही बढ़ ना सकी हरी घास की ओर
कि सुबह-सुबह तुम्हारा प्यार ले सकूँ
और तुम मेरी प्यारी दोस्त सुबह की
वो हवा
जो जीवन शक्ति से परिपूर्ण
मंद मंद छाई रहती हो हर सुबह
मुझे छूं के चली जाती हो
अफ़सोस करके कि मैं पहियों पर
चलती जाती हूँ चलती जाती हूँ
और तुम मेरे सबसे प्यारे दोस्त
मेरे सूरज
रहते हो हर पल साथ मेरे चाहे
मैं तुम्हें नमन करूं या न करूं
दोस्ती पूरी निभाते हो चाहे
मैं ध्यान दूं ना दूं
और सतरंगी दोस्तों की मेरी
वो दुनिया
हजारों फूल कलियों से भरा उपवन
तो बस राह ही देखता रहता है
मेरी ओर कि मैं एक पल तो रूककर
उनसे रूबरू होकर बात करूं
और मेरे प्यारे पंछी दोस्त
बस कभी-कभी मैं उनका ख्याल करके
उनके लिए दाना और पानी रखती हूं
अपनी छत पर
पहियों पर दौड़ने से पहले
वो भी यही सोचते हैं उड़ते-उड़ते
एक पल तो रूककर मैं उनसे
रूबरू होकर बात कर लूं
शाम ढले जब रात हो तो आते हैं
मेरे प्यारे दोस्त चांद सितारे
कहते हैं आ जाओ पास हमारे
ले लें तुम्हें आगोश में सारे
पर हाय मैं तब भी न कर पाती
उनसे बात चाहकर लाख
मन चाहता तो बहुत है
कि एक पल तो मैं रूक जाऊँ
और रूबरू होकर उन्हें बतलाऊँ
कि कितना चाहती हूँ मैं भी उन्हें
हर पल वो मेरे साथ हैं
ये एहसास ही तो
देता है ताकत मुझे
कि पहियों पर भागती दौड़ती इस
रवानगी मैं अकेले नहीं
तुम भी तो साथ हो मेरे।

******

आशुतोष भूयां
उप महाप्रबंधक (परियोजना)

मेरी मन्नत सिर्फ तुम

कल रात तन्हाई की बाहों में लिपटे हुए,
मैंने ख़ुश रहने का एक फ़लसफ़ा सुना था।
कोई कह रहा था कि इस मतलबी दुनिया में अगर मुस्कुराना है,
तो अपनी हर एक दबी हुई हसरत को, हर एक ख़्वाहिश को,
एक कोरे कागज़ पर बेबाक लिख देना चाहिए।
कहते हैं, दिल का बोझ हल्का हो जाता है, जब उसे लफ़्ज़ मिल जाते हैं।

मैंने भी एक ठंडी आह भरी, और उठ खड़ा हुआ।
दराज़ से वो दो कोरे पन्ने निकाले जिन पर वक़्त की धूल जमी थी,
और उँगलियों के बीच उस ठंडी कलम को थाम लिया।
मुझे लगा, बरसों से इस सीने में जो तड़प, जो अधूरापन, जो सिसकियाँ दफ़्न हैं,

आज जब वो बहेंगी, तो ये दो पन्ने भी कम पड़ जाएँगे।

सोचा था, अपनी नाकामियों और आरज़ूओं की एक लंबी दास्तान लिखूँगा।

फिर रात का सन्नाटा गहराता गया... और मैं ख़यालों के मलबे को कुरेदता रहा।

घड़ी की सुइयाँ टिक-टिक करती रहीं, जैसे मेरे अकेलेपन का मज़ाक उड़ा रही हों।

वो रात महज़ वक़्त का गुज़रना नहीं थी, वो एक पूरी सदी थी,

जिसमें मैंने अपनी रूह के हर कोने को छान मारा, हर चोट को दोबारा सह लिया।

पर अजीब बेबसी थी... कलम हाथ में थी, पर उँगलियाँ सुन्न थीं।

कितनी अजीब बात है न? जिसके पास खोने को पूरा जहान हो,

उसके पास सुबह लिखने को सिर्फ़ एक नाम बचा था।

जब भोर की उस धुंधली, उदास रोशनी ने मेरे कमरे में क़दम रखा,

तो काँपते हाथों से मैंने उन पन्नों को उठा कर देखा।

वहाँ ख़्वाहिशों का कोई सैलाब नहीं था, कोई लंबी फेहरिस्त नहीं थी,

वहाँ तो सिर्फ़ मेरी आँखों से टपके हुए आंसुओं के दाग़ थे,

और उन सूखे आंसुओं के बीच, दर्द से सिसकती हुई दो लाइनें लिखी थीं...

मेरी हर ख़ुशी की इकलौती वजह और पहली चाहत— तुम हो,

और इस ज़िंदगी की तरफ़ से माँगी गई आख़िरी मन्नत - भी बस तुम ही हो...

****

अंकित द्विवेदी
वरिष्ठ प्रबंधक (विधि)

भारत का नवीकरणीय ऊर्जा में योगदान

ऊर्जा किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास, औद्योगिक प्रगति तथा सामाजिक उत्थान का मूल आधार होती है। बढ़ती जनसंख्या, तीव्र औद्योगिकीकरण और तकनीकी उन्नति के कारण ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है। परंपरागत ऊर्जा स्रोत—जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस—सीमित हैं और इनके अत्यधिक उपयोग से पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे में नवीकरणीय ऊर्जा विश्वभर के देशों के लिए एक अनिवार्य विकल्प बन गई है।

नवीकरणीय ऊर्जा उन स्रोतों को कहा जाता है जो प्राकृतिक रूप से लगातार पुनः उत्पन्न होते रहते हैं, जैसे—सौर, पवन, जलविद्युत, बायोमास और भू-तापीय ऊर्जा। भारत ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति करते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी एक मजबूत पहचान बनाई है। आज भारत न केवल नवीकरणीय ऊर्जा का बड़ा उत्पादक है, बल्कि हरित ऊर्जा परिवर्तन का अग्रणी देश भी बनकर उभर रहा है।

भारत में नवीकरणीय ऊर्जा का महत्व

भारत विश्व की तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, जहाँ ऊर्जा की मांग निरंतर बढ़ रही है। यदि देश केवल जीवाश्म ईंधनों पर निर्भर रहता, तो इससे न केवल पर्यावरणीय संकट उत्पन्न होता, बल्कि ऊर्जा आयात पर निर्भरता भी बढ़ जाती। इसलिए नवीकरणीय ऊर्जा भारत के लिए पर्यावरणीय ही नहीं, बल्कि आर्थिक और रणनीतिक आवश्यकता भी है।

भारत के पास प्रचुर प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं—वर्षभर सूर्य प्रकाश, कई राज्यों में तेज हवाएँ, विस्तृत नदी तंत्र और कृषि आधारित जैविक अवशेष। इनका उचित उपयोग करके देश स्वच्छ और टिकाऊ ऊर्जा की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

सौर ऊर्जा में भारत की अग्रणी भूमिका

सौर ऊर्जा भारत की नवीकरणीय ऊर्जा रणनीति का प्रमुख स्तंभ है। भौगोलिक स्थिति के कारण भारत में लगभग पूरे वर्ष पर्याप्त सूर्य प्रकाश उपलब्ध रहता है, जिससे सौर ऊर्जा की अपार संभावनाएँ बनती हैं।

भारत सरकार ने 2010 में "राष्ट्रीय सौर मिशन" की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाना था। इसके फलस्वरूप बीते वर्षों में सौर ऊर्जा क्षमता में तेजी से वृद्धि हुई है। राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु और कर्नाटक इस क्षेत्र में अग्रणी राज्य हैं।

राजस्थान स्थित भड़ला सोलर पार्क विश्व के सबसे बड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों में से एक है। इसके अलावा रूफटॉप सोलर, सौर पंप और ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा आधारित बिजली आपूर्ति को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नेतृत्व दिखाया है। "इंटरनेशनल सोलर अलायंस (ISA)" की स्थापना भारत और फ्रांस द्वारा की गई, जिसका उद्देश्य सूर्य-समृद्ध देशों के बीच सहयोग बढ़ाकर स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देना है। यह भारत की वैश्विक नेतृत्व क्षमता का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

पवन ऊर्जा में भारत की उपलब्धियाँ

पवन ऊर्जा भारत का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। भारत विश्व के प्रमुख पवन ऊर्जा उत्पादक देशों में शामिल है। तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और राजस्थान इसके प्रमुख केंद्र हैं।

भारत के तटीय क्षेत्रों और कुछ आंतरिक हिस्सों में तेज हवाएँ पवन ऊर्जा के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं। आधुनिक तकनीक के उपयोग से टरबाइनों की क्षमता और दक्षता में भी वृद्धि हुई है।

हाल के वर्षों में भारत "ऑफशोर विंड एनर्जी" यानी समुद्र आधारित पवन परियोजनाओं पर भी ध्यान दे रहा है। यह भविष्य में ऊर्जा सुरक्षा को और सशक्त बना सकता है।

जलविद्युत और बायोमास ऊर्जा

भारत में जलविद्युत ऊर्जा का विकास लंबे समय से जारी है। हिमालयी क्षेत्र और बड़े नदी तंत्र इस क्षेत्र के लिए उपयुक्त हैं। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों में कई जलविद्युत परियोजनाएँ सक्रिय हैं।

हालाँकि बड़ी परियोजनाओं से पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियाँ जुड़ी होती हैं, इसलिए अब छोटे और मध्यम स्तर की परियोजनाओं को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

भारत बायोमास ऊर्जा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। कृषि प्रधान देश होने के कारण यहाँ कृषि अवशेष, गोबर और जैविक कचरे की प्रचुरता है। इनसे बायोगैस, बायोफ्यूल और बिजली उत्पादन किया जा रहा है, जिससे ऊर्जा उत्पादन के साथ-साथ अपशिष्ट प्रबंधन और ग्रामीण रोजगार को भी बढ़ावा मिलता है।

सरकारी पहलें

भारत सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएँ लागू की हैं, जैसे:

- **राष्ट्रीय सौर मिशन** – सौर ऊर्जा क्षमता बढ़ाने हेतु
- **पीएम-कुसुम योजना** – किसानों के लिए सौर पंप और ऊर्जा उपयोग
- **ग्रीन हाइड्रोजन मिशन** – स्वच्छ ईंधन के रूप में हाइड्रोजन को बढ़ावा
- **PLI योजना** – सोलर उपकरणों के घरेलू निर्माण को प्रोत्साहन

इन पहलों से भारत ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

वैश्विक भूमिका

भारत न केवल घरेलू स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी ऊर्जा परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। "पेरिस जलवायु समझौते" के तहत भारत ने कार्बन उत्सर्जन कम करने और गैर-जीवाश्म ईंधनों का उपयोग बढ़ाने का संकल्प लिया है।

इंटरनेशनल सोलर अलायंस, विकासशील देशों के साथ सहयोग और हरित विकास मॉडल को अपनाकर भारत दुनिया को स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में मार्गदर्शन दे रहा है।

चुनौतियाँ

नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति के बावजूद कुछ चुनौतियाँ बनी हुई हैं:

- **ऊर्जा भंडारण की समस्या** – सौर और पवन ऊर्जा मौसम पर निर्भर हैं
- **भूमि और निवेश की कमी** – बड़े प्रोजेक्ट्स के लिए संसाधनों की आवश्यकता
- **तकनीकी निर्भरता** – कुछ उपकरणों के लिए आयात पर निर्भरता

इन चुनौतियों से निपटने के लिए निरंतर नीति सुधार और तकनीकी विकास आवश्यक है।

भविष्य की संभावनाएँ

भारत में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। ग्रीन हाइड्रोजन, बैटरी स्टोरेज, स्मार्ट ग्रिड और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी जैसे क्षेत्र ऊर्जा क्रांति को नई दिशा देंगे।

ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा आधारित समाधान सामाजिक और आर्थिक विकास को गति प्रदान करेंगे, जिससे समग्र राष्ट्रीय विकास संभव होगा।

निष्कर्ष

नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत का योगदान प्रेरणादायक और महत्वपूर्ण है। सौर, पवन, जलविद्युत और बायोमास ऊर्जा में उल्लेखनीय प्रगति भारत को स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बना रही है।

हालाँकि कुछ चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, लेकिन मजबूत नीतियों, तकनीकी नवाचार और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से भारत न केवल अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है, बल्कि विश्व को एक हरित और टिकाऊ भविष्य की दिशा में मार्गदर्शन भी दे सकता है।

इस प्रकार, नवीकरणीय ऊर्जा में भारत का योगदान राष्ट्रीय विकास के साथ-साथ वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

****

पीयूष अग्रवाल

प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

बैटरी ऊर्जा भंडारण: भारत की हरित ऊर्जा यात्रा की आवश्यकता

भारत आज ऊर्जा क्षेत्र में एक बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में देश ने सौर ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। बड़े सौर पार्कों, रूफटॉप सोलर योजनाओं और सरकारी नीतियों के कारण भारत विश्व के प्रमुख सौर ऊर्जा उत्पादक देशों में शामिल हो चुका है। सरकार ने वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा क्षमता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सौर ऊर्जा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

हालाँकि, सौर ऊर्जा के इस तेज विस्तार के साथ कुछ नई चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं। सौर ऊर्जा का उत्पादन पूरी तरह सूर्य के प्रकाश पर निर्भर करता है। दोपहर के समय जब सूर्य की तीव्रता अधिक होती है, तब बिजली उत्पादन भी बहुत अधिक हो जाता है। लेकिन उस समय बिजली की मांग हमेशा उतनी अधिक नहीं होती। परिणामस्वरूप कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है जब बिजली की आपूर्ति मांग से अधिक हो जाती है। इससे बिजली की कीमतें बहुत कम हो जाती हैं और कुछ परिस्थितियों में नकारात्मक स्तर तक पहुँच जाती हैं।

नकारात्मक बिजली दरों का अर्थ यह है कि बिजली उत्पादकों को अपनी बिजली ग्रिड में देने के लिए भी भुगतान करना पड़ सकता है। दुनिया के कई देशों में यह स्थिति पहले से देखी जा चुकी है और भारत में भी धीरे-धीरे ऐसे संकेत दिखाई देने लगे हैं। विशेषकर उन राज्यों में जहाँ बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा उत्पादन हो रहा है, दोपहर के समय अतिरिक्त बिजली ग्रिड पर दबाव बढ़ा देती है। कई बार अतिरिक्त बिजली का उपयोग नहीं हो पाता और सौर संयंत्रों का उत्पादन कम करना पड़ता है। इससे स्वच्छ ऊर्जा की बर्बादी होती है और परियोजनाओं की आर्थिक व्यवहार्यता भी प्रभावित होती है।

ऐसी परिस्थितियों में बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) एक प्रभावी समाधान के रूप में उभर रही है। इसका उद्देश्य अतिरिक्त बिजली को संग्रहित कर आवश्यकता के समय उपयोग करना है। जब दोपहर में सौर ऊर्जा उत्पादन अधिक

होता है और बिजली की कीमतें गिर जाती हैं, तब बैटरियाँ उस अतिरिक्त ऊर्जा को संग्रहित कर सकती हैं। बाद में शाम के समय जब बिजली की मांग बढ़ती है, तब वही ऊर्जा ग्रिड में वापस उपलब्ध कराई जा सकती है।

बैटरी स्टोरेज केवल ऊर्जा संग्रहण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह पूरे ऊर्जा तंत्र को अधिक स्थिर और विश्वसनीय बनाता है। बिजली ग्रिड को संतुलित बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है। सौर और पवन ऊर्जा जैसी अक्षय ऊर्जा स्रोत प्राकृतिक परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। मौसम बदलने या सूर्यास्त होने पर उत्पादन अचानक घट सकता है। ऐसी स्थिति में बैटरियाँ तुरंत ऊर्जा उपलब्ध कराकर ग्रिड को स्थिर बनाए रखने में मदद करती हैं।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के लिए बैटरी स्टोरेज का महत्व और भी अधिक है। देश के कई दूरस्थ क्षेत्रों में आज भी स्थिर बिजली आपूर्ति एक चुनौती बनी हुई है। यदि अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के साथ बैटरी स्टोरेज को जोड़ा जाए, तो इन क्षेत्रों में भी विश्वसनीय बिजली उपलब्ध कराई जा सकती है। इसके अतिरिक्त, तेजी से बढ़ते शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था के कारण भारत की ऊर्जा मांग लगातार बढ़ रही है। आने वाले वर्षों में इलेक्ट्रिक वाहनों का विस्तार भी बिजली की मांग को नई दिशा देगा। ऐसे समय में बैटरी स्टोरेज ऊर्जा प्रबंधन का महत्वपूर्ण आधार बनेगा।

आर्थिक दृष्टि से भी बैटरी स्टोरेज लाभकारी सिद्ध हो सकता है। इससे अतिरिक्त सौर ऊर्जा की बर्बादी रोकी जा सकती है तथा महंगे पीक पावर संयंत्रों पर निर्भरता कम की जा सकती है। पिछले कुछ वर्षों में बैटरी तकनीक की लागत में उल्लेखनीय कमी आई है। विशेष रूप से लिथियम-आयन बैटरियाँ अब पहले की तुलना में अधिक सस्ती और कुशल हो चुकी हैं। भविष्य में नई तकनीकों के विकास के साथ इनकी लागत और भी कम होने की संभावना है।

भारत सरकार भी इस क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कदम उठा रही है। कई नई सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं के साथ बैटरी स्टोरेज को जोड़ा जा रहा है। "मेक इन इंडिया" अभियान के अंतर्गत देश में उन्नत बैटरी निर्माण को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि भारत इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सके।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बैटरी ऊर्जा भंडारण भारत की हरित ऊर्जा यात्रा का अगला और अनिवार्य चरण है। केवल अधिक सौर ऊर्जा उत्पादन पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि उस ऊर्जा का सही समय पर उपयोग सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है। नकारात्मक बिजली दरों जैसी नई चुनौतियों का समाधान बैटरी स्टोरेज के माध्यम से प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

यदि भारत समय रहते बैटरी स्टोरेज अवसंरचना, अनुसंधान और घरेलू निर्माण पर पर्याप्त ध्यान देता है, तो निश्चय ही देश स्वच्छ, सुरक्षित और आत्मनिर्भर ऊर्जा भविष्य की ओर तेजी से अग्रसर होगा। आने वाला समय केवल ऊर्जा उत्पादन का नहीं, बल्कि ऊर्जा को समझदारी से संरक्षित और उपयोग करने का होगा, और इस परिवर्तन के केंद्र में बैटरी ऊर्जा भंडारण की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रहेगी।

****

आशुतोष तिवारी
प्रबंधक (परियोजना)

शहर लिखा है

लिखना था तो गाँव भी लिखते पर तुमने केवल शहर लिखा है
हाला लिखते, प्याला लिखते, बस्ती की मधुशाला लिखते
धूल भरी पगडंडी, पौखर, बहता गन्दा नाला लिखते
अभिशापित सी कुछ विधवाएं, पनघट जाती मधुबालाएँ
नाई और हलवाई पंडित जर-जर एक शिवाला लिखते
रहने को बस मिट्टी के घर जले हुए टपरी के छप्पर
भरी दुपहरी तपती माटी , खेत जोतने वाला लिखते
सागर में तो अमृत भी था तुमने फिर क्यों जहर लिखा है
लिखना था तो गाँव भी लिखते पर तुमने केवल शहर लिखा है।।

निर्धनता निर्बलता लिखते हिम सा दर्द पिघलता लिखते
चिपका पेट पीठ से जिसका कैसे टूक निगलता लिखते

अन्धेरों के सामराज्य पर पहरेदारी झंझाओं की
फिर भी जुगनू के दीपक में तेल कौनसा जलता लिखते
मिट जाता अस्तित्व धरा से उड़ता बनकर भाप आदमी
फिर भी अहंकार में डूबा मनुज मनुज को दलता लिखते
हुक्का और चिलम लिख देते तुमने नाहक 'दहर' लिखा है
लिखना था तो गाँव को लिखते पर तुमने केवल शहर लिखा है।।

सत्य सदा क्यों निर्बल रहता,उसके कंठ का ताला लिखते
जात पात को जिसने बोया उसके विष का प्याला लिखते
जीवन को जो प्राण बांटते वह बरगद क्यों कटे पडे हैं
जिस वसुधा पर बाग हरे थे उस पर सूखे ठूंठ खडे हैं
सूखे ताल तलैया, सूखी सब नदिया नहरे लिख देते
निर्धनता की निर्बलता पर शासक सब बहरे लिख देते
मादकता मोहकता पर तो तुमने ऑठो पहर लिखा है
लिखना ही था गाँव भी लिखते पर तुमने केवल शहर लिखा है।।

हंसता गाता सावन लिखते सम्बन्धों को पावन लिखते
बरखा, बदरी, पुरवा, झूले, ऋतुराज मनभावन लिखते
विश्वासों के तरण ताल में आशाओं के स्वप्न रोपकर
जो दिनरात निरन्तर बरसी उन आंखों का सावन लिखते
पनघट , पीपल, गगरी ,गोरी सखियों की कुछ बातें लिखते
जिस पोखर में सोती रजनी उसके जल की रातें लिखते
धरती पर तो प्यार बहुत था फिर भी तुमने कहर लिखा है
लिखना ही था गाँव को लिखते पर तुमने केवल शहर लिखा है।।

****

अजय कुमार गुप्ता

प्रबंधक (राजभाषा)

हिंदी साहित्य का इतिहास

हिंदी साहित्य का इतिहास एक सहस्राब्दी (एक हजार वर्ष) से भी अधिक पुराना है। यह विश्व के सबसे समृद्ध, जीवंत और विस्तृत साहित्य रूपों में से एक है। राजनीतिक उथल-पुथल, धार्मिक क्रांतियों और सामाजिक बदलावों के बीच विकसित हुआ यह साहित्य भारत की सांस्कृतिक आत्मा का दर्पण है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इस विशाल इतिहास को प्रवृत्तियों के आधार पर **चार प्रमुख कालखंडों** में विभाजित किया है, जो आज भी सर्वमान्य है।

1. आदिकाल / वीरगाथा काल (संवत 1050 – 1375 / लगभग 10वीं से 14वीं शताब्दी)

यह हिंदी साहित्य का शैशवकाल (शुरुआती दौर) था, जो राजनीतिक दृष्टि से अशांति और विदेशी आक्रमणों का दौर था।

- **साहित्यिक प्रवृत्तियाँ:** इस काल में राजाओं के आश्रय में रहने वाले चारण कवियों ने अपने स्वामियों की वीरता का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया। इसमें युद्धों का सजीव वर्णन और वीर रस के साथ-साथ श्रृंगार रस की प्रधानता थी।
- **प्रमुख रचनाएँ और कवि:**
  - **चंदबरदाई:** इन्होंने हिंदी का प्रथम महाकाव्य **'पृथ्वीराज रासो'** लिखा।
  - **जगनिक:** 'परमाल रासो' (आल्हा-ऊदल की वीरगाथा)।
  - **अमीर खुसरो:** खड़ी बोली के आदि कवि, जो अपनी पहेलियों और मुकरियों के लिए प्रसिद्ध हैं।
  - **विद्यापति:** मैथिली कोकिल, जिन्होंने 'पदावली' की रचना की।

2. भक्तिकाल / पूर्व मध्यकाल (संवत 1375 – 1700 / लगभग 14वीं से 17वीं शताब्दी)

भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का **'स्वर्ण युग'** कहा जाता है। इस काल में साहित्य महलों से निकलकर झोपड़ियों और आम जनता की भाषा तक पहुँचा। इसे दो मुख्य धाराओं में बांटा गया है:

- **अ) निर्गुण काव्य धारा:** ईश्वर के निराकार रूप की उपासना।
  - **ज्ञानाश्रयी शाखा (संत काव्य):** कबीर दास इसके प्रणेता थे, जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया और ज्ञान को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताया (प्रमुख कृति: *बीजक*)।

- **प्रेमाश्रयी शाखा (सूफी काव्य):** मलिक मुहम्मद जायसी इसके प्रमुख कवि थे, जिन्होंने प्रेम के माध्यम से ईश्वर को पाने का संदेश दिया (प्रमुख कृति: *पद्मावत*)।

- **ब) सगुण काव्य धारा:** ईश्वर के साकार (अवतार) रूप की उपासना।
  - **कृष्णाश्रयी शाखा:** सूरदास (प्रमुख कृति: *सूरसागर*), मीराबाई और रसखान, जिन्होंने ब्रजभाषा में कृष्ण की बाल-लीलाओं और प्रेम का अद्भुत वर्णन किया।
  - **रामाश्रयी शाखा:** गोस्वामी तुलसीदास इसके शीर्ष कवि हैं, जिन्होंने अवधी भाषा में **'रामचरितमानस'** जैसा कालजयी महाकाव्य लिखकर समाज को मर्यादा और आदर्श का पाठ पढ़ाया।

3. रीतिकाल / उत्तर मध्यकाल (संवत 1700 – 1900 / लगभग 17वीं से 19वीं शताब्दी)

यह काल दरबारी संस्कृति का काल था। देश में मुगलों और क्षेत्रीय राजाओं का वैभव चरम पर था, इसलिए कवियों का ध्यान ईश्वर से हटकर राजाओं को प्रसन्न करने पर केंद्रित हुआ।

- **साहित्यिक प्रवृत्तियाँ:** इस काल में काव्य-लक्षणों, अलंकारों, छंदों और नायिका-भेद के नियमों (रीति) के आधार पर कविताएँ लिखी गईं। इसमें श्रृंगार रस और कला-पक्ष की प्रधानता थी।
- **प्रमुख कवि और रचनाएँ:**
  - **बिहारी लाल:** इन्होंने **'बिहारी सतसई'** लिखी। इनके बारे में कहा जाता है कि इन्होंने "गागर में सागर" भरा है।
  - **केशवदास:** 'रामचंद्रिका' (इन्हें कठिन काव्य का प्रेत भी कहा जाता है)।
  - **घनानंद, भूषण और देव:** भूषण इस काल के अपवाद थे, जिन्होंने श्रृंगार के बजाय वीर रस में (छत्रसाल और शिवाजी पर) कविताएँ लिखीं।

4. आधुनिक काल (संवत 1900 से अब तक / 19वीं शताब्दी के मध्य से वर्तमान)

यह काल हिंदी साहित्य का सबसे बहुआयामी और क्रांतिकारी काल है। इस काल की सबसे बड़ी विशेषता **गद्य (Prose) का विकास** और कविता की भाषा के रूप में **खड़ी बोली का आगमन** था। इसे कई युगों में विभाजित किया गया है:

- **भारतेंदु युग (1850-1900):** भारतेंदु हरिश्चंद्र को 'आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक' कहा जाता है। इस युग में देशप्रेम और सामाजिक सुधार की भावना का उदय हुआ।
- **द्विवेदी युग (1900-1920):** आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इस युग का नाम पड़ा। इन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से खड़ी बोली हिंदी को व्याकरण सम्मत और परिमार्जित (शुद्ध) बनाया। मैथिलीशरण गुप्त (रचना: *साकेत, भारत-भारती*) इस युग के राष्ट्रकवि कहलाए।

- **छायावाद युग (1920-1936):** यह हिंदी कविता का सबसे कलात्मक दौर था, जिसमें प्रकृति-चित्रण, व्यक्तिवाद और रहस्यवाद की प्रधानता थी। इसके चार प्रमुख स्तंभ हैं: **जयशंकर प्रसाद** (*कामायनी*), **सूर्याकांत त्रिपाठी 'निराला'**, **सुमित्रानंदन पंत** और **महादेवी वर्मा**।
- **प्रगतिवाद और प्रयोगवाद (1936-1953):** प्रगतिवाद पर मार्क्सवाद का प्रभाव था (कवि: नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल)। प्रयोगवाद में अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन) ने 'तार सप्तक' के माध्यम से कविता में नए प्रयोगों की शुरुआत की।
- **नई कविता और समकालीन साहित्य (1953 से अब तक):** इसमें आधुनिक जीवन की विसंगतियों, महानगरीय बोध और आम आदमी के संघर्षों को जगह मिली।

हिंदी गद्य की प्रमुख विधाएँ और उनके पुरोधा

आधुनिक काल में केवल कविता ही नहीं, बल्कि गद्य की विभिन्न विधाओं ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया:

- **उपन्यास और कहानी: मुंशी प्रेमचंद** को 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है। उन्होंने *गोदान*, *गबन* और *कफन* जैसी रचनाओं के माध्यम से भारतीय ग्रामीण जीवन और किसानों के दर्द को जीवंत किया।
- **नाटक:** जयशंकर प्रसाद (*चंद्रगुप्त*, *स्कंदगुप्त*) और भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी नाटक विधा को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया।
- **आलोचना और निबंध:** आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी समीक्षा और इतिहास-लेखन को वैज्ञानिक धरातल प्रदान किया।

हिंदी साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि यह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की वैचारिक नींव भी बना। माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर' और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी विभूतियों ने अपनी लेखनी से देशवासियों में राष्ट्रभक्ति का संचार किया। आज डिजिटल युग में भी हिंदी साहित्य ब्लॉगिंग, ई-पत्रिकाओं और पॉडकास्ट के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान मजबूत कर रहा है।

****

एस कृष्ण कुमार
उप प्रबंधक (मानव संसाधन)

तिरुवनंतपुरम, केरलम – मेरा गृह जिला

भारत के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर स्थित, अरब सागर के तट पर बसा तिरुवनंतपुरम (त्रिवेंद्रम) केरलम की राजधानी होने के साथ-साथ एक अद्वितीय सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक केंद्र है। इसके पश्चिम में विशाल अरब सागर और पूर्व में तमिलनाडु की पर्वतीय सीमाएँ हैं, जो इस शहर को एक विशेष भौगोलिक पहचान प्रदान करती हैं। महात्मा गांधी ने इसे "भारत का सदाबहार शहर" कहा था, और वास्तव में इसकी हरियाली, शांति और आधुनिकीकरण का संतुलन इसे इस उपाधि के योग्य बनाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

तिरुवनंतपुरम का इतिहास अत्यंत समृद्ध और गौरवशाली रहा है। यह शहर पहले त्रावणकोर रियासत की राजधानी था, जो दक्षिण भारत के सबसे सुव्यवस्थित और प्रगतिशील राज्यों में गिना जाता था। 18वीं शताब्दी में त्रावणकोर के शासकों ने प्रशासन, शिक्षा और कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास किया। स्वतंत्रता के पश्चात, 1 नवंबर 1956 को राज्यों के पुनर्गठन के बाद तिरुवनंतपुरम को केरलम की राजधानी घोषित किया गया। तब से यह शहर प्रशासन और नीति निर्धारण का प्रमुख केंद्र बन गया है।

सांस्कृतिक धरोहर

इस शहर की सांस्कृतिक आत्मा उसकी परंपराओं, मंदिरों और कला संस्थानों में स्पष्ट झलकती है। यहाँ का सांस्कृतिक जीवन विविधता से भरपूर है, जिसमें शास्त्रीय नृत्य, संगीत, साहित्य और त्योहारों का विशेष स्थान है। तिरुवनंतपुरम में हर त्योहार पूरे उत्साह और आनंद के साथ मनाया जाता है:

ओणम – फसल का त्योहार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन

विशु – मलयालम नववर्ष

क्रिसमस और ईद – धार्मिक सौहार्द का प्रतीक

यहाँ के प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा ने भारतीय चित्रकला को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई। उनकी पेंटिंग्स भारतीय पौराणिक कथाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत करती हैं।

शहर के प्रमुख सांस्कृतिक स्थल:

नेपियर संग्रहालय – इंडो-सारासेनिक वास्तुकला का सुंदर उदाहरण

श्री चित्रा आर्ट गैलरी – भारतीय और विदेशी कला का भंडार

कनकक्कुन्नू पैलेस – सांस्कृतिक कार्यक्रमों का केंद्र

कोवडीआर पैलेस – त्रावणकोर राजपरिवार का निवास

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर – आस्था का केंद्र

तिरुवनंतपुरम का हृदय है – श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर, जो भगवान विष्णु को समर्पित है। यहाँ भगवान विष्णु अनंत नाग पर शयन अवस्था में विराजमान हैं। इसी मंदिर के कारण शहर का नाम "तिरु-अनंत-पुरम" पड़ा, जिसका अर्थ है – "भगवान अनंत का शहर।"

यह मंदिर अपनी वास्तुकला, आध्यात्मिक महत्व और विशाल खजाने के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इसे दुनिया के सबसे समृद्ध मंदिरों में से एक माना जाता है। इसकी द्रविड़ शैली की भव्य संरचना और गोपुरम (प्रवेश द्वार) इसे दक्षिण भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण बनाते हैं।

विज्ञान और शिक्षा का उभरता केंद्र

तिरुवनंतपुरम केवल सांस्कृतिक शहर ही नहीं, बल्कि भारत का एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और शैक्षणिक केंद्र भी है। यहाँ कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्थान स्थित हैं:

ISRO (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन), VSSC (विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र), IIST (भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान), RGCB (राजीव गांधी जैव प्रौद्योगिकी केंद्र), CTCRI (केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान), NIIST (राष्ट्रीय अंतर्विषयक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान) और केरलम विश्वविद्यालय।

ये संस्थान भारत को अंतरिक्ष, विज्ञान, कृषि और जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही, टेक्नोपार्क—भारत के सबसे बड़े IT पार्कों में से एक—तिरुवनंतपुरम को डिजिटल और आर्थिक रूप से मजबूत बनाता है।

परिवहन और रणनीतिक महत्व

तिरुवनंतपुरम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भारत के सबसे पुराने अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों में से एक है। यह न केवल नागरिक उड़ानों का केंद्र है, बल्कि: भारतीय वायु सेना की दक्षिणी वायु कमान, पायलट प्रशिक्षण (राजीव गांधी विमानन अकादमी) के लिए भी महत्वपूर्ण है।

यह शहर समुद्री दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विझिंजम अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह, भारत का पहला गहरे पानी वाला ट्रांस-शिपमेंट पोर्ट है। यह आधुनिक तकनीक से सुसज्जित और अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग मार्ग से जुड़ा हुआ है, जो भारत के व्यापार को वैश्विक स्तर पर गति देता है।

प्राकृतिक सुंदरता और पर्यटन

तिरुवनंतपुरम प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है। यहाँ समुद्र, पहाड़, झील, वन्यजीव और बैकवाटर्स का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

प्रमुख पर्यटन स्थल:

कोवलम और वर्कला बीच – अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध समुद्र तट

पोनमुडी – सुंदर हिल स्टेशन और ट्रेकिंग स्थल

वेली और अक्कुलम पर्यटन गाँव – नौका विहार और प्राकृतिक दृश्य

नेय्यार और पेप्पारा अभयारण्य – वन्यजीव प्रेमियों के लिए आकर्षण

यह शहर सात छोटी पहाड़ियों पर बसा हुआ है, जो इसे एक विशिष्ट भौगोलिक सौंदर्य प्रदान करता है।

खान-पान और जीवनशैली

यह शहर अपने पारंपरिक केरलम व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का सबसे खास भोजन है "सद्या", जो केले के पत्ते पर परोसी जाने वाली शाकाहारी दावत है। इसमें विभिन्न प्रकार की करी, अचार और मिठाइयाँ होती हैं। इसके अलावा नारियल आधारित व्यंजन, समुद्री खाद्य पदार्थ, मसालेदार करी तिरुवनंतपुरम को भोजन प्रेमियों के लिए स्वर्ग बनाते हैं।

तिरुवनंतपुरम केवल एक राजधानी शहर नहीं, बल्कि एक जीवंत पहचान है—जहाँ परंपरा और आधुनिकता एक साथ सांस लेते हैं। यह शहर आध्यात्मिकता, विज्ञान, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता का ऐसा संगम है, जो इसे भारत के सबसे विशिष्ट और आकर्षक शहरों में शामिल करता है। चाहे आप इतिहास प्रेमी हों, वैज्ञानिक दृष्टि वाले हों, प्रकृति से प्रेम करते हों या आध्यात्मिक शांति की तलाश में हों—तिरुवनंतपुरम हर किसी के लिए कुछ न कुछ खास लेकर आता है।

****

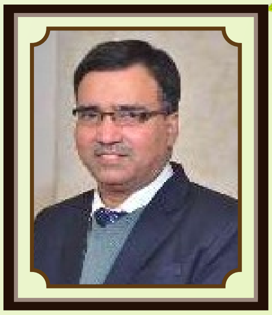

रिजवान अथर
उप प्रबंधक (परियोजना)

योग को अपनाएं और जीवन को बेहतर बनाएं

सुबह की ताज़ी हवा, शांत वातावरण और उगते सूर्य की किरणों के साथ दिन की शुरुआत करना हर किसी के लिए आदर्श होता है। हालांकि, सुबह उठने में आलस आना स्वाभाविक है, लेकिन यदि हम योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लें, तो यह छोटा सा प्रयास हमारे जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है।

योग केवल एक व्यायाम नहीं, बल्कि एक प्राचीन भारतीय विज्ञान है जिसकी उत्पत्ति लगभग 5000 वर्ष पहले हुई थी। यह शरीर, मन और आत्मा को संतुलन में रखने की एक अत्यंत प्रभावशाली और व्यवस्थित पद्धति है। योग में शारीरिक आसन (Asanas), श्वास तकनीक (Pranayama) और ध्यान (Meditation) का समन्वय होता है, जो हमें समग्र स्वास्थ्य प्रदान करता है।

योग क्यों अपनाएं?

आज की तेज़-तर्रार जीवनशैली में तनाव, चिंता और शारीरिक समस्याएँ आम हो गई हैं। ऐसे में योग एक प्राकृतिक समाधान के रूप में सामने आता है। यह न केवल हमारे शरीर को स्वस्थ बनाता है बल्कि मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन भी प्रदान करता है।

नियमित योग अभ्यास के प्रमुख लाभ

1. शारीरिक लाभ

- बेहतर लचीलापन और संतुलन

योग के नियमित अभ्यास से शरीर की मांसपेशियाँ और जोड़ मजबूत और लचीले बनते हैं। यह हमें सक्रिय और ऊर्जावान बनाए रखता है तथा बढ़ती उम्र के प्रभाव को धीमा करता है।

- मांसपेशियों की शक्ति में वृद्धि

योग एक सम्पूर्ण व्यायाम है, जो शरीर के हर हिस्से पर काम करता है और ताकत बढ़ाने में मदद करता है।

- हृदय एवं श्वसन स्वास्थ्य

प्राणायाम और आसनों के माध्यम से रक्त संचार बेहतर होता है, रक्तचाप नियंत्रित रहता है और फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है।

- दर्द से राहत

योग कमर दर्द, माइग्रेन, गठिया और अन्य पुरानी बीमारियों में राहत देने में सहायक सिद्ध हुआ है।

2. मानसिक और भावनात्मक लाभ

- तनाव में कमी

योग तंत्रिका तंत्र को संतुलित करता है और तनाव हार्मोन (कोर्टिसोल) को घटाकर मन को शांत करता है।

- चिंता और अवसाद से राहत

नियमित योग अभ्यास सकारात्मक सोच को बढ़ाता है और मानसिक विकारों से राहत दिलाने में मदद करता है।

- बेहतर एकाग्रता और मस्तिष्क स्वास्थ्य

ध्यान और योगासन मस्तिष्क की कार्यक्षमता को बेहतर बनाते हैं, जिससे याददाश्त और एकाग्रता बढ़ती है।

- गहरी और बेहतर नींद

योग शरीर की जैविक घड़ी (सर्केडियन रिद्म) को संतुलित करता है, जिससे नींद की गुणवत्ता सुधरती है।

योग: एक जीवनशैली, केवल अभ्यास नहीं

चाहे आप एक शुरुआती हों या वर्षों से योग कर रहे हों, इसके लाभ हर किसी को चौंका सकते हैं। योग हमें केवल स्वस्थ शरीर ही नहीं देता, बल्कि यह जीवन जीने का सही तरीका सिखाता है।
यह एक निरंतर आत्म-खोज की यात्रा है, जिसमें हम अपने भीतर की शांति, संतुलन और ऊर्जा को पहचानते हैं।

आज से शुरुआत करें

- ✓ रोज़ाना सिर्फ 15–30 मिनट योग से शुरुआत करें
- ✓ सरल आसनों और प्राणायाम से शुरू करें
- ✓ नियमितता बनाए रखें
- ✓ सकारात्मक सोच अपनाएं

योग केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक कला और निरंतर चलने वाली आत्म-खोज की प्रक्रिया है। नियमित अभ्यास से शरीर में लचीलापन, शक्ति और संतुलन तो आता ही है, साथ ही मानसिक शांति और चेतना का स्तर भी ऊंचा उठता है।

"योग करें, निरोग रहें और जीवन को नई ऊर्जा से भरपूर बनाएं।"

****

गौरव वार्ष्णेय
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

स्वयं के प्रति जिम्मेदार

ऊर्जा का आदान-प्रदान इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपने आप को बदलने के लिए कैसी सोच रखते हैं। अगर हम चाहते हैं कि लोग हमें अच्छी और सकारात्मक ऊर्जा दें, तो हमें भी अच्छा और सकारात्मक इंसान बनने की कोशिश करनी चाहिए और अपनी कमजोरियों को कम करना चाहिए। क्योंकि लोग हमारे व्यवहार को देखते हैं। जब उन्हें हमारी कमियाँ दिखती हैं, तो वे आसानी से नकारात्मक ऊर्जा देने लगते हैं। लेकिन जब हम बेहतर बनने की कोशिश करते हैं, तो दूसरे लोग भी खुद को सुधारने और एक-दूसरे की अलग-अलग बातों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित होते हैं। इससे हमारे आपसी संबंध और ऊर्जा का आदान-प्रदान बेहतर होता है।

इसके लिए हमें अपने अहंकार (ईगो) को कम करना पड़ता है और अपने अंदर बदलाव लाना पड़ता है। हमें यह भी सीखना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति को अपने तरीके से रहने की जगह दें। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे, तो वह व्यक्ति अपने आप में सिमट जाएगा और हमारी सकारात्मक ऊर्जा को स्वीकार नहीं कर पाएगा। इसलिए हमें लोगों के दिल का ध्यान रखना चाहिए और उन्हें माफ करना सीखना चाहिए।

इसके लिए सहानुभूति (दूसरों की भावनाओं को समझना) बहुत जरूरी है। एक समझदार और आध्यात्मिक व्यक्ति दूसरों को समझकर और उनकी भावनाओं को महसूस करके अपने और दूसरों के बीच ऊर्जा को बेहतर बनाता है। वह सिर्फ ऊपर-ऊपर देखकर किसी के बारे में फैसला नहीं करता। अक्सर ऐसा करने से ही नकारात्मक ऊर्जा पैदा होती है।

जब दो लोग या पक्ष संतुष्ट होते हैं, तभी वे सकारात्मक बनते हैं। और जब वे सकारात्मक होते हैं, तो वे अच्छाई फैलाते हैं और शांति का माहौल बनाते हैं। जितनी ज्यादा आपसी समझ बढ़ती है, उतनी ही ज्यादा सकारात्मक ऊर्जा वे एक-दूसरे के साथ बाँटते हैं।

****

निष्ठा निधि

उप प्रबंधक (मानव संसाधन)

हरिद्वार–ऋषिकेश यात्रा: आध्यात्मिकता और प्रकृति का अद्भुत संगम

24 जनवरी 2026 को मैं अपने माता-पिता के साथ तीन दिनों के लिए हरिद्वार और ऋषिकेश की यात्रा आरंभ की। उत्तराखंड राज्य में स्थित ये दोनों नगर न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। गंगा नदी के तट पर बसे ये पवित्र स्थल सदियों से श्रद्धालुओं और यात्रियों के आकर्षण का केंद्र रहे हैं।

हमारी यात्रा की शुरुआत हरिद्वार से हुई, जिसे "भगवान का द्वार" भी कहा जाता है। मान्यता है कि यहीं गंगा नदी पहाड़ों से निकलकर मैदानों में प्रवेश करती है। हरिद्वार के प्रमुख स्थलों में से एक **हर की पौड़ी** का धार्मिक महत्व अत्यंत अधिक है। कहा जाता है कि यहां भगवान विष्णु के चरणचिन्ह हैं, और यही कारण है कि यह स्थान श्रद्धा का केंद्र है। शाम के समय हमने हर की पौड़ी में होने वाली विश्वप्रसिद्ध **गंगा आरती** में भाग लिया। सैकड़ों दीपों की रोशनी, पंडितों द्वारा संगीतमय मंत्रोच्चार और गंगा की मधुर धारा—यह सब मिलकर एक ऐसा अलौकिक वातावरण बना रहे थे जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पूरा वातावरण दिव्यता से भर गया हो। हमने **शांतिकुंज आश्रम** का भी दर्शन किया, जो गायत्री परिवार का मुख्यालय है और आध्यात्मिक शिक्षा तथा योग साधना का प्रमुख केंद्र माना जाता है। वहां का अनुशासित और शांत वातावरण मन को स्थिर करता है।

अगले दिन हम ऋषिकेश पहुंचे, जो हरिद्वार से लगभग 25 किलोमीटर दूर स्थित है। ऋषिकेश को विश्वभर में "योग नगरी" के रूप में जाना जाता है। यहाँ अनेक आश्रम, योग केंद्र और ध्यान स्थल हैं जहाँ देश-विदेश से लोग आत्मिक शांति की खोज में आते हैं।ऋषिकेश की प्राकृतिक सुंदरता ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। चारों ओर हरे-भरे पहाड़, स्वच्छ गंगा नदी और शांत वातावरण—यह सब मिलकर मन को असीम शांति प्रदान करते हैं। हमने **लक्ष्मण झूला** और **राम झूला** जैसे प्रसिद्ध झूला पुलों का भ्रमण किया, जो गंगा नदी के ऊपर बने हैं और यहाँ के प्रमुख आकर्षणों में से हैं। इतिहास के अनुसार, लक्ष्मण झूला का नाम भगवान राम के छोटे भाई लक्ष्मण के नाम पर पड़ा,

जिन्होंने इसी स्थान पर जूट की रस्सियों से गंगा पार की थी। यह लोककथा इस स्थान की धार्मिक आस्था को और गहरा बनाती है।

ऋषिकेश का शांत वातावरण इतना प्रभावशाली था कि मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो मैंने वहाँ ईश्वर की उपस्थिति को महसूस किया हो। यहाँ का हर कोना ध्यान और आत्मचिंतन के लिए उपयुक्त लगता है।
यात्रा के दौरान हमने स्थानीय भोजनालयों में भी भोजन किया। उत्तराखंड के सरल और स्वादिष्ट व्यंजन—जैसे कढ़ी-चावल, आलू के गुटके और ताजी रोटियाँ—हमारी यात्रा के आनंद को और बढ़ा रहे थे। यहाँ के लोग अत्यंत सरल, विनम्र और सहयोगी स्वभाव के थे, जिससे हमें हर जगह अपनापन महसूस हुआ।

तीन दिनों की यह यात्रा कब समाप्त हो गई, इसका एहसास ही नहीं हुआ। वापसी के समय मन में यही इच्छा थी कि काश हम कुछ दिन और रुक पाते। सुहावना मौसम, पवित्र गंगा की धारा और शांत वातावरण—इन सबने इस यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया। यह यात्रा केवल एक पर्यटन अनुभव नहीं थी, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक यात्रा भी थी। हरिद्वार की धार्मिक आस्था और ऋषिकेश की प्राकृतिक शांति ने मेरे मन पर एक गहरा प्रभाव छोड़ा। यह यात्रा मेरे लिए सुखद, ज्ञानवर्धक और जीवन भर याद रहने वाला अनुभव बन गई।

****

अमित कुमार

उप प्रबंधक (आई. टी.) – सूचना सुरक्षा समूह

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और साइबर सुरक्षा : एक छोटी सी सीख

स्मार्ट तकनीक, लेकिन सावधानी भी जरूरी

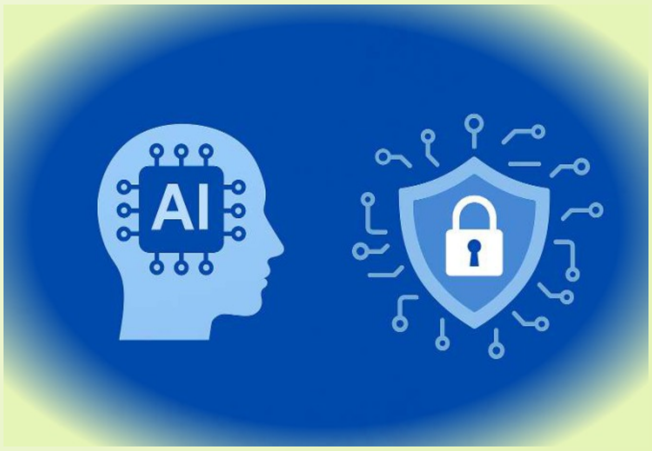

रोहन एक युवा पेशेवर था जो अपने दैनिक कार्यों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित एप्लिकेशनों और स्मार्ट उपकरणों का उपयोग करता था। ईमेल लिखने से लेकर ऑनलाइन बैंकिंग और सोशल मीडिया तक, उसकी अधिकांश गतिविधियाँ डिजिटल माध्यमों पर निर्भर थीं।

एक दिन उसके मोबाइल पर बैंक के नाम से एक संदेश आया, जिसमें खाते के सत्यापन के लिए एक लिंक दिया गया था। संदेश और वेबसाइट बिल्कुल वास्तविक लग रहे थे। बिना जांच किए रोहन ने अपनी जानकारी दर्ज कर दी। कुछ ही समय बाद उसके खाते से अनधिकृत लेन-देन होने लगे।

जांच करने पर पता चला कि वह AI की सहायता से तैयार किए गए एक फिशिंग हमले का शिकार हो गया था। इसके अलावा, उसके मोबाइल में इंस्टॉल एक संदिग्ध एप्लिकेशन उसकी व्यक्तिगत जानकारी भी एकत्र कर रहा था।

इस घटना ने रोहन को सिखाया कि आधुनिक तकनीक सुविधाजनक अवश्य है, लेकिन इसके सुरक्षित उपयोग की जिम्मेदारी भी हमारी ही है।

AI से जुड़े प्रमुख सुरक्षा जोखिम

- AI आधारित फिशिंग ईमेल और नकली वेबसाइटें
- डीपफेक (Deepfake) वीडियो और ऑडियो के माध्यम से धोखाधड़ी
- व्यक्तिगत एवं संवेदनशील डेटा की चोरी

- उन्नत साइबर हमले और मालवेयर
- सोशल मीडिया एवं डिजिटल पहचान का दुरुपयोग

डिजिटल उपयोगकर्ताओं के लिए आवश्यक सावधानियां

- किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले उसकी सत्यता जांचें।
- केवल विश्वसनीय स्रोतों से ही मोबाइल एप्लिकेशन डाउनलोड करें।
- मजबूत पासवर्ड और मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (MFA) का उपयोग करें।
- अपने मोबाइल और कंप्यूटर को नियमित रूप से अपडेट रखें।
- बैंकिंग, पासवर्ड या अन्य संवेदनशील जानकारी किसी भी अनधिकृत प्लेटफॉर्म पर साझा न करें।
- संदिग्ध ईमेल, संदेश या कॉल से सावधान रहें।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज के डिजिटल युग की एक महत्वपूर्ण तकनीक है, जो हमारे कार्यों को सरल और तेज बनाती है। हालांकि, इसके बढ़ते उपयोग के साथ साइबर सुरक्षा के खतरे भी बढ़ रहे हैं। इसलिए प्रत्येक डिजिटल उपयोगकर्ता को जागरूक, सतर्क और सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाना चाहिए। सही जानकारी और सावधानी ही साइबर खतरों से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है।

****

साक्षी साव
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा)

शहरों की भागदौड़ और पहाड़ों की शांति

"शहर हमें सपनों का पीछा करना सिखाते हैं, और पहाड़ हमें उन सपनों के बीच जीना सिखाते हैं।"

आज की तेज़ रफ्तार जिंदगी में शहरों का जीवन लगातार भागदौड़ से भरा हुआ है। सुबह की जल्दबाज़ी, ट्रैफिक का शोर, काम की जिम्मेदारियाँ और समय की कमी—इन सबके बीच दिन कब शुरू होता है और कब खत्म हो जाता है, इसका एहसास भी नहीं होता। शहर हमें अवसर, सुविधाएँ और आगे बढ़ने के कई रास्ते देते हैं, लेकिन इस दौड़ में कई बार हम अपने मन की शांति को पीछे छोड़ देते हैं।

पेशेवर जीवन में भी यही स्थिति देखने को मिलती है। लक्ष्य पूरे करने की कोशिश, काम की समय-सीमा और जिम्मेदारियों के बीच व्यक्ति लगातार व्यस्त रहता है। यह व्यस्तता हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, लेकिन कभी-कभी यही गति मन को थका भी देती है। ऐसे समय में हमें थोड़ी शांति और ठहराव की जरूरत महसूस होती है।

यहीं पर पहाड़ों की शांति एक अलग ही अनुभव देती है। पहाड़ों की ठंडी हवा, हरियाली से भरे दृश्य और वहाँ की खामोशी मन को तुरंत सुकून देती है। शहरों के शोर से दूर, पहाड़ हमें यह एहसास कराते हैं कि जीवन केवल लगातार दौड़ते रहने का नाम नहीं है, बल्कि कभी-कभी रुककर खुद को महसूस करना भी उतना ही जरूरी है।

पहाड़ों के बीच बिताया गया थोड़ा सा समय भी मन को नई ऊर्जा और सकारात्मकता से भर देता है। जब हम वापस अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी में लौटते हैं, तो वही जिम्मेदारियाँ हमें पहले से अधिक स्पष्ट और सहज लगने लगती हैं।

अंततः जीवन का सही संतुलन शायद इसी में है—शहरों की भागदौड़ में अपने सपनों को पूरा करना और समय-समय पर पहाड़ों की शांति में खुद को फिर से ढूँढ लेना। क्योंकि कभी-कभी, सबसे गहरी शांति हमें प्रकृति की सादगी में ही मिलती है।

****

ईशा श्रीवास्तव

पत्नि- मैत्रेय श्रीवास्तव

अस्तित्व

आँखों में सपना लिए एक एहसास की कामना करती हूँ।
एक ऐसा एहसास, ऐसी छवि।
एक ऐसी ही कृति का आगमन करती हूँ।
अपने हाथों की लकीरों को समझने का प्रयास करती हूँ
और शायद कभी समय का विपक्षी बनकर उन्हें बदलने में सफल हो सकूँ।

अपने भाग्य पर गर्व होता है।
अपना सपना सच होते हुए,
वह एहसास पाने की खुशी होती है।
एक ऐसा व्यक्तित्व, एक ऐसा महापुरुष,
जो सदैव मुझे प्रोत्साहित करता है।
बचपन में उसकी उंगलियां पकड़कर चलना सीखा था,
आज उन्हें सहारा देने की मेरी बारी है।

मेरे भाग्य में सूर्य की किरण की तरह आया वह प्रकाश;
वह गरिमा जो भगवान तो नहीं,
किंतु मेरे जीवन, मेरे अस्तित्व का देवता है।
जब भी मेरे जीवन में अँधेरा कुछ करता है।
वह एक ऐसा कवच है जो मेरे सामने आकर मेरी रक्षा करने को सदैव तैयार है।
मैंने जो भी सपना देखा, वह शुरुआत थी,
किंतु मस्तिष्क से लेकर हृदय तक का सफर एक ऐसे महापुरुष ने करवाया,

जिसका खुद का जीवन किन गहराइयों में दबा है, क्या पता?

कभी किसी ने पूछने की कोशिश न की,
कि आँखों में सजे उन सपनों को किसी ने आँसुओं की तरह बहने न दिया,
गलत कदमों को पड़ने से पहले ही रोक दिया, मुझे बचा लिया।
क्या कभी किसी ने पूछा, तुम्हारा जीवन क्या है?
क्या कभी जानने का प्रयास किया कि
तुम्हारे जीवन की खुशियाँ किस दिशा में गुम हो गईं, क्या पता?
शायद ये ऐसे प्रश्न हैं,
जिसका वह जवाब वह व्यक्तित्व भी नहीं दे सकता।

जब मैंने डर कर आँखें खोलीं,
सदैव उसे अपने पास पाया।
एक साये की तरह जिसने मेरे कदमों को बढ़ने का आत्मविश्वास दिया,
वह व्यक्तित्व एक अँधेरे कमरे में आशा की किरण है,
किंतु वही दिया होकर भी खुद अँधेरों से जूझकर जूझता, खुद के दुखों को भूलता।
एक आशा का स्वरूप है।
शायद कभी मैं, जब उनके आशीर्वाद से कुछ बन जाऊँ,
तो उनसे एक बार एक प्रश्न ज़रूर करूँगी।
उस आशा के स्रोत से पूछूँगी,
"क्या आपके इस त्याग को लौटा पाऊँगी?"
यह एक ऐसा प्रश्न है जो न तो पिता बता सकता है,
न मैं, तो कौन उनके व्यक्तित्व पर लगे प्रश्नचिह्न को हटा सकेगा?
शायद कोई नहीं। उस व्यक्तित्व को पूरे प्रेम के साथ नमन है।

****

राहुल राज
कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजना)

कार्यस्थल के सारथी: ISFJ व्यक्तित्व

मायर्स-ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर (MBTI) परीक्षण के अनुसार, इंसानी व्यक्तित्व को 16 अलग-अलग श्रेणियों में बांटा जा सकता है। वैसे तो हर व्यक्तित्व अपने आप में विशिष्ट है और उस पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है, किंतु इस लेख में हमारा ध्यान ISFJ व्यक्तित्व पर केंद्रित है। और हो भी क्यों न? इस पत्रिका के अधिकांश पाठक कामकाजी पेशेवर और कार्यालयीन कर्मचारी हैं, और इस विशेष व्यक्तित्व का 'काम' (Work) के साथ एक बेहद गहरा और अनोखा नाता है।

क्या है MBTI परीक्षण?

मायर्स-ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर (MBTI) व्यक्तित्व मूल्यांकन का एक बेहद लोकप्रिय माध्यम है। इसे कार्ल जुंग के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर कैथरीन कुक ब्रिग्स और इसाबेल ब्रिग्स मायर्स द्वारा विकसित किया गया था। यह पैमाना चार मुख्य आयामों (Dimensions) में आपकी प्राथमिकताओं को टटोलकर आपको 16 में से किसी एक व्यक्तित्व श्रेणी में रखता है:

MBTI के 4 मुख्य आयाम:

आयाम (Dimension)	विकल्प (Options)	अर्थ (Meaning)
ऊर्जा का स्रोत	अंतर्मुखी (Introversion - I) / बहिर्मुखी (Extraversion - E)	आप अपनी ऊर्जा कहाँ केंद्रित करते हैं
सूचना की शैली	संवेदी (Sensing - S) / सहजज्ञान युक्त (Intuition - N)	आप जानकारियों को कैसे समझते और प्रोसेस करते हैं
निर्णय की शैली	तार्किक (Thinking - T) / भावनात्मक (Feeling - F)	आप अपने फैसले किस आधार पर लेते हैं
जीवनशैली का तरीका	अनुशासित (Judging - J) / लचीला (Perceiving - P)	आप व्यवस्था और नियमों को कैसे अपनाते हैं

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि MBTI का मुख्य उद्देश्य लोगों को किसी निश्चित खांचे में बाँधना नहीं, बल्कि यह समझने में सहायता करना है कि वे जानकारी को कैसे ग्रहण करते हैं, निर्णय कैसे लेते हैं और अपने आसपास की दुनिया से कैसे जुड़ते हैं।

कौन हैं ISFJ? (Introverted, Sensing, Feeling, Judging)

ISFJ का अर्थ है: अंतर्मुखी (I), संवेदी (S), भावनात्मक (F) और अनुशासित (J) कार्यस्थल पर ISFJ बेहद भरोसेमंद, कर्तव्यनिष्ठ और अनुशासित कर्मचारी होते हैं, जो एक व्यवस्थित और सहयोगात्मक माहौल में बहुत बेहतर परिणाम देते हैं। वे अपनी जिम्मेदारी, अनुशासन, सूक्ष्म विवरणों पर ध्यान और उच्च गुणवत्ता वाले कार्य के लिए जाने जाते हैं। किसी भी टीम में अक्सर वही व्यक्ति होते हैं जो सुनिश्चित करते हैं कि कार्य समय पर और सही तरीके से पूरा हो।

ISFJ व्यक्तित्व को समझने के लिए यह प्रसिद्ध कथन अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होता है: *"ISFJ के लिए कार्य केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि संतोष, उपलब्धि और आत्म-तृप्ति का स्रोत है। यदि उन्हें अपने कार्य में संतुष्टि नहीं मिलती, तो वे प्रायः और अधिक परिश्रम करने लगते हैं, इस आशा में कि परिस्थितियाँ बेहतर हो जाएँगी। निश्चित ही वह कोई ISFJ ही रहा होगा जिसने स्वर्ग के बारे में कहा था—'वहाँ चाहे जो कुछ भी हो, उसमें काम का होना जरूरी है, अन्यथा वह स्वर्ग नहीं कहलाएगा।'"*

आमतौर पर, एक सुखी ISFJ वही है जिसके दिन का अधिकांश समय अपने परिवार, मित्रों या नियोक्ता (Employer) की किसी न किसी रूप में सेवा करने में बीतता है। उनके लिए काम केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण है, यह उन्हें मानसिक विकास, परिपक्वता और संतुष्टि देता है। यहाँ तक कि उनके लिए पालन-पोषण, शिक्षण, प्रबंधन, मार्गदर्शन और संबंधों का निर्वाह, ये सब भी कर्तव्य और सेवा की अभिव्यक्ति के ही अलग-अलग रूप हैं।

निष्कर्ष

हमारा अंतिम उद्देश्य स्वयं को जानना और स्वयं में निरंतर सुधार करना होना चाहिए। ऐसे में, कार्यस्थल पर मौजूद सभी 'वर्कहोलिक' ISFJ मित्रों को थोड़ा रुककर आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है कि वे अपनी सीमाओं को पहचानें और आवश्यकता पड़ने पर "ना" कहना भी सीखें। वहीं उनके सहकर्मियों, मित्रों और परिवारजनों की भी जिम्मेदारी है कि वे उनकी निष्ठा और समर्पण को सहज रूप से न लें, बल्कि उसे पहचानें, सराहें और प्रोत्साहित करें।

****

नमन वशिष्ठ
कार्यपालक प्रशिक्षु (परियोजनाएं)

स्वदेशी सौर सेल: कुछ वर्षों की पीड़ा, कई दशकों की समृद्धि

"सौर ऊर्जा — सुनिश्चित है, शुद्ध है, सुरक्षित है। यह ऊर्जा आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। हमारा लक्ष्य स्पष्ट है — सौर पैनल हो, या विद्युत वाहनों के कलपुर्जे, हमें अपना सब कुछ अपने देश में बनाना है।"**– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी — स्वतंत्रता दिवस भाषण, लाल किला, 15 अगस्त 2025**

वर्ष 2020 में मध्य प्रदेश के रेवा में एशिया का सबसे बड़ा — 750 मेगावाट का — सौर ऊर्जा संयंत्र राष्ट्र को समर्पित किया जा रहा था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उस अवसर पर एक बात विशेष जोर देकर कहा कि — **सौर ऊर्जा की पूरी क्षमता तब तक नहीं हासिल होगी, जब तक देश में बेहतर सौर पैनल, बैटरी और भंडारण क्षमता न हो।** उस दिन बोए गए बीज आज, छह वर्षों बाद, 1 जून 2026 की डीसीआर अनिवार्यता के रूप में अंकुरित हुए हैं।

15 अगस्त 2025 को लाल किले की प्राचीर से उन्होंने फिर दोहराया — *"ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के हमारे संकल्प से 11 वर्षों में सौर ऊर्जा में 30 गुना वृद्धि हुई है।"* यह संकल्प अब नीति का रूप ले चुका है।

डीसीआर क्या है और यह अनिवार्यता क्यों?

घरेलू सामग्री आवश्यकता (डीसीआर) — एक ऐसी नीतिगत अनिवार्यता जो यह सुनिश्चित करती है कि सरकारी योजनाओं में लगाए जाने वाले सौर पैनल पूर्णतः भारत में निर्मित हों। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने मार्च 2025 में स्पष्ट किया कि क्रिस्टलीय-सिलिकॉन तकनीक पर आधारित सौर सेल तभी **स्वदेशी** माने जाएंगे जब वे भारत में **अप्रसारित सिलिकॉन वेफर (काले वेफर) से बने हों।** चीन से आयातित प्रसारित वेफर (नीले वेफर) से बने सेल इस श्रेणी में नहीं आएंगे।

पहले यह नियम केवल कुछ चुनिंदा सरकारी योजनाओं — जैसे प्रधानमंत्री-कुसुम, सीपीएसयू योजना और प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना — तक सीमित था। किंतु **1 जून 2026 से** स्वीकृत मॉडल और निर्माता सूची की सूची-2 के तहत सौर सेल की अनिवार्यता आवासीय, वाणिज्यिक और औद्योगिक — तीनों श्रेणियों के छत परियोजनाओं पर लागू हो गई।

174 GW	**~30 GW**	**90+ GW**
मॉड्यूल निर्माण क्षमता (मार्च 2026)	**ALMM-सूचीबद्ध घरेलू सेल क्षमता (2026)**	**भारत की वार्षिक सौर माँग (अनुमानित)**
स्रोत: पीआईबी/एमएनआरई	*एमएनआरई आँकड़े*	*स्रोत: अर्था एनर्जी, 2026*

अल्पकालिक चुनौती — 30% तक मूल्य वृद्धि

कई रिपोर्टों ने यह स्पष्ट किया है कि डीसीआर अनिवार्यता से सौर परियोजनाओं की लागत में **अल्पकाल में 20–30% की वृद्धि** हो सकती है। और यह केवल अनुमान नहीं है — बाजार के आंकड़े इसकी पुष्टि करते हैं।

आयातित मॉड्यूल (चीन)	स्वदेशी डीसीआर मॉड्यूल
₹ 13.5 से 15 प्रति वाट	**₹ 23 से 28 प्रति वाट**
गैर-डीसीआर टॉपकॉन, जनवरी 2026	*डीसीआर टॉपकॉन, जनवरी 2026*

एसएमएम विश्लेषण (जनवरी 2026) के अनुसार डीसीआर टॉपकॉन मॉड्यूल का मूल्य 0.289 अमेरिकी डॉलर प्रति वाट था, जबकि गैर-डीसीआर मॉड्यूल केवल 0.155 अमेरिकी डॉलर प्रति वाट — **लगभग दोगुना अंतर।** मेरकॉम इंडिया के अनुसार राजस्थान नवीकरणीय ऊर्जा संघ के अध्यक्ष ने बताया कि डीसीआर सेल की कीमत ₹13.75 प्रति वाट है, जबकि आयातित सेल मात्र ₹3.75 प्रति वाट में उपलब्ध हैं।

मूल कारण: भारत की वार्षिक सौर माँग 90+ गीगावाट है, जबकि स्वीकृत मॉडल और निर्माता सूची-सूचीबद्ध घरेलू सेल उत्पादन क्षमता अभी केवल ~30 गीगावाट है। यह आपूर्ति-माँग का असंतुलन ही अल्पकालिक मूल्य दबाव का मुख्य कारण है। (स्रोत: अर्था एनर्जी, फरवरी 2026)

इस मूल्य वृद्धि का प्रभाव परियोजना निष्पादन पर भी पड़ रहा है। कुछ राज्यों में प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना के पोर्टल पर दर्शाई गई बेंचमार्क कीमतें बाजार दरों से 20-30% कम हैं, जिससे उपभोक्ताओं में भ्रम की स्थिति बन रही है। यह एक वास्तविक चुनौती है, जिसे स्वीकार किए बिना नीति की सफलता अधूरी रहेगी।

दीर्घकालिक दृष्टि — आत्मनिर्भरता का असली अर्थ

किंतु इस अल्पकालिक पीड़ा को बड़े संदर्भ में देखना आवश्यक है। वर्ष 2014 में भारत की सौर मॉड्यूल निर्माण क्षमता मात्र 2.3 गीगावाट थी। आज मार्च 2026 तक यह **174 गीगावाट तक पहुँच चुकी है** — एक ऐतिहासिक उपलब्धि जिसे स्वयं प्रधानमंत्री ने 'आत्मनिर्भरता की ओर एक और मील का पत्थर' बताया। टाटा पावर ने 4.3 गीगावाट की सेल निर्माण इकाई चालू की है, रिलायंस इंडस्ट्रीज 20 गीगावाट की एकीकृत सुविधा स्थापित कर रही है, और अदाणी समूह पहले से 4 गीगावाट की क्षमता संचालित कर रहा है।

① आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन

- चीन की किसी भी भू-राजनीतिक कार्रवाई या व्यापार प्रतिबंध का भारत की सौर परियोजनाओं पर असर नहीं होगा
- कोविड-19 ने सिखाया — एकल स्रोत आपूर्ति श्रृंखला कितनी खतरनाक हो सकती है
- वेफर से मॉड्यूल तक पूर्ण घरेलू श्रृंखला भारत को ऊर्जा उपकरणों में स्वतंत्र बनाएगी

② ऊर्जा सुरक्षा एवं संप्रभुता

- जब सौर सेल से मॉड्यूल तक उत्पादन भारत में होगा, तो 500 गीगावाट लक्ष्य वास्तविक ऊर्जा संप्रभुता का प्रतीक बनेगा
- आयात निर्भरता घटने से विदेशी मुद्रा की बचत; भारत प्रतिवर्ष लगभग ₹50,000+ करोड़ सौर उपकरण आयात पर खर्च करता था

③ रोजगार सृजन

- आईआरईएनए के अनुसार 2030 तक सौर क्षेत्र में ~35 लाख नए रोजगार सृजित होने का अनुमान
- घरेलू सेल निर्माण इस क्षमता को कई गुना बढ़ाएगा — सेल, वेफर, मशीनरी, रखरखाव सभी में
- टाटा पावर, रिलायंस, अदाणी की नई इकाइयाँ पहले से हजारों रोजगार दे रही हैं

④ तकनीकी स्वामित्व

- घरेलू अनुसंधान एवं विकास में निवेश बढ़ेगा — टॉपकॉन, एचजेटी और भविष्य की पेरोव्स्काइट तकनीक में भारत की पकड़ मजबूत होगी
- मूल्य निर्धारण में भारतीय निर्माताओं का दबदबा; अब कीमत तय करने में चीन पर निर्भरता नहीं

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य — दर्द और निर्माण

इतिहास गवाह है कि हर बड़े औद्योगिक बदलाव में संक्रमण की पीड़ा अनिवार्य रही है। 1990 के दशक में जब भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में निवेश किया, तो प्रारंभिक लागत अधिक थी — आज भारत विश्व की सूचना प्रौद्योगिकी राजधानी है। जब 2000 के दशक में दुनिया ने चीन पर सौर पैनल निर्माण सौंपा, तो उसने एक दशक में वैश्विक कीमतें 90% घटा दीं — **लेकिन साथ में दुनिया को उस पर निर्भर भी बना दिया। भारत अब वही भूल नहीं करेगा।**

मार्ग प्रशस्ति — अल्पकालिक पीड़ा को न्यूनतम करने के उपाय

चरण	कार्रवाई
तत्काल (0–6 माह)	एएलएमएम सूची-2 में अधिक निर्माताओं का शीघ्र पंजीकरण; आपूर्ति-माँग अंतर को पाटने के लिए उत्पादन क्षमता विस्तार पर तीव्र गति से अनुमति।
मध्यकाल (6–18 माह)	पीएम सूर्य घर योजना के बेंचमार्क मूल्यों को डीसीआर बाजार दरों के अनुरूप संशोधित करना; डीसीआर सेल निर्माताओं को विशेष दीर्घकालिक ऋण सुविधा।
दीर्घकाल (2027–30)	सिलिकॉन वेफर और पॉलीसिलिकॉन तक घरेलू उत्पादन विस्तार; वेफर से मॉड्यूल तक पूर्ण एकीकृत भारतीय आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण।

भारत अप्रैल 2026 में 288 गीगावाट की गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता के साथ विश्व में तीसरे स्थान पर है। यह यात्रा 2014 में 76 गीगावाट से शुरू हुई थी। डीसीआर अनिवार्यता इस यात्रा का वह महत्त्वपूर्ण मोड़ है जहाँ भारत केवल **उपभोक्ता** से **निर्माता** बनने की दिशा में निर्णायक कदम उठा रहा है। जो देश अपनी ऊर्जा के उपकरण स्वयं बनाता है, वही देश वास्तव में ऊर्जा में आत्मनिर्भर कहलाता है।

यह अल्पकालिक पीड़ा भारत की दीर्घकालिक समृद्धि का मूल्य है — और यह मूल्य चुकाने योग्य है।

****

डेस्क प्रशिक्षण

दिनांक - 16.04.206 को राजभाषा ग्रुप, इरेडा द्वारा, आई एच सी कार्यालय में कार्यरत मानव संसाधन विभाग एवं कंपनी सचिव विभाग हेतु डेस्क प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।संबंधित कार्यक्रम का संचालन श्री रोहित कुमार साव, उप-प्रबंधक राजभाषा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से सभी कर्मचारियों को राजभाषा नीति-नियम, राजभाषा प्रोत्साहन योजना, राजभाषा संबंधी विभिन्न अनुवाद टूल आदि की जानकारी प्रदान की गई।प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री दीपक कुमार बारीक, कार्यकारी निदेशक, विधि एवं मानव संसाधन विभाग तथा श्रीमती माला घोष चौधुरी, महाप्रबंधक, मानव की गरिमामय उपस्थित

हिंदी संगोष्ठी

दिनांक- 22.04.2026 को हिंदी ग्रुप, इरेडा द्वारा सभी कर्मचारियों हेतु "हिंदी ई-टूल्स एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अनुप्रयोग" विषय पर आभाषी माध्यम से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संबंधित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ ओम प्रकाश, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, कला संकाय, उत्तरी परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय से उपस्थित रहे।

हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

दिनांक- 06/05/2026 को राजभाषा प्रभाग, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा माननीय केंद्रीय मंत्री श्री प्रह्लाद वी जोशी जी की अध्यक्षता में हिंदी की सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया। संबंधित बैठक में मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालयों के प्रमुख इस समिति के गणमान्य सरकारी सदस्य होते है। तदनुसार इस बैठक के सौजन्य से श्री प्रदीप कुमार दास, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारतीय अक्षय ऊर्जा संस्था लिमिटेड द्वारा इरेडा में राजभाषा के क्षेत्र में हो रहे नवीन कार्यों एवं वित्तीय वर्ष 2025-26 में हुए कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया।राजभाषा प्रभाग, इरेडा की ओर से श्रीमती संगीता श्रीवास्तव, उप-महाप्रबंधक, राजभाषा एवं श्री अजय कुमार गुप्ता, प्रबंधक, राजभाषा ने बैठक में सहभागिता की।

हिंदी कार्यशाला

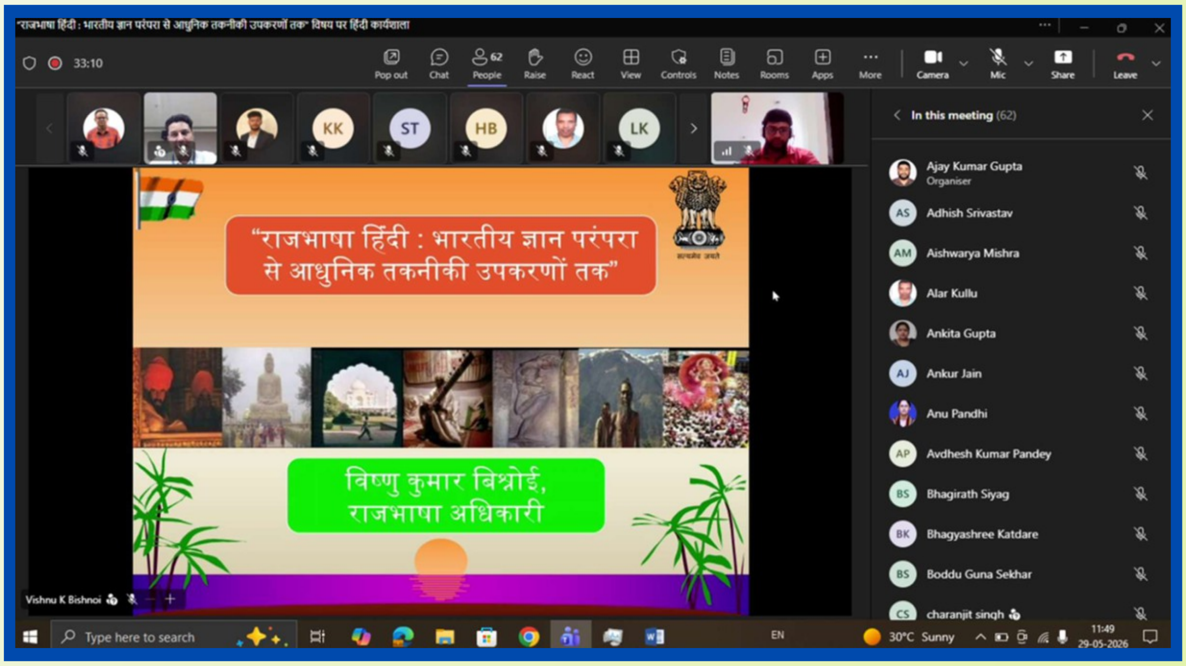

दिनांक- 29.05.2026 को हिंदी ग्रुप, इरेडा द्वारा सभी कर्मचारियों हेतु "राजभाषा हिंदी : भारतीय ज्ञान परंपरा से आधुनिक तकनीकी उपकरणों तक" विषय पर ऑनलाइन/ आभाषी (माइक्रोसॉफ्ट टिम्स) माध्यम से कार्यशाला का आयोजन किया गया।संबंधित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्री विष्णु कुमार बिश्नोई, अधिकारी (राजभाषा), राजभाषा विभाग, इंजीनियरिंग इंडिया लिमिटेड, दिल्ली मुख्यालय से उपस्थित रहे।

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा
(नवरत्न सीपीएसई)

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

पंजीकृत कार्यालय / Registered Office

प्रथम तल, कोर-4ए, ईस्ट कोर्ट, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003,
दूरभाष / Phone +91-11-24682206-19 फैक्स / Fax +91-11-24682202

कॉर्पोरेट कार्यालय / Corporate Office

तीसरी मंजिल, अगस्त क्रांति भवन, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली - 110066
दूरभाष / Phone : +91-11-2671400-12 फैक्स / Fax +91-11-26717416

इरेडा व्यवसाय केंद्र / IREDA Business Centre

एनबीसीसी कॉम्प्लेक्स, ब्लॉक नंबर 2, प्लेट बी, 7वीं मंजिल, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली - 110023
दूरभाष / Phone : +91-11-24604157, 24347700-24347799

ई-मेल : cmd @ireda.in वेबसाइट : www.ireda.in

हमारे साथ यहाँ जुड़े:

@IREDALimited @IREDALtd @iredaofficial